तन्त्रयोग

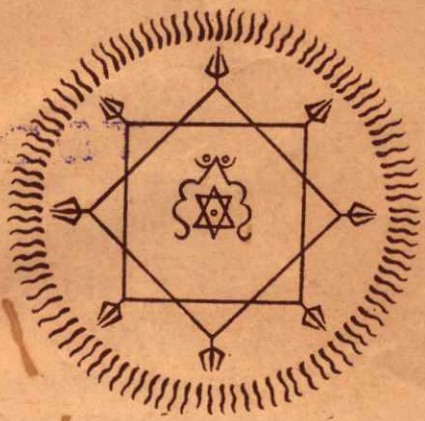

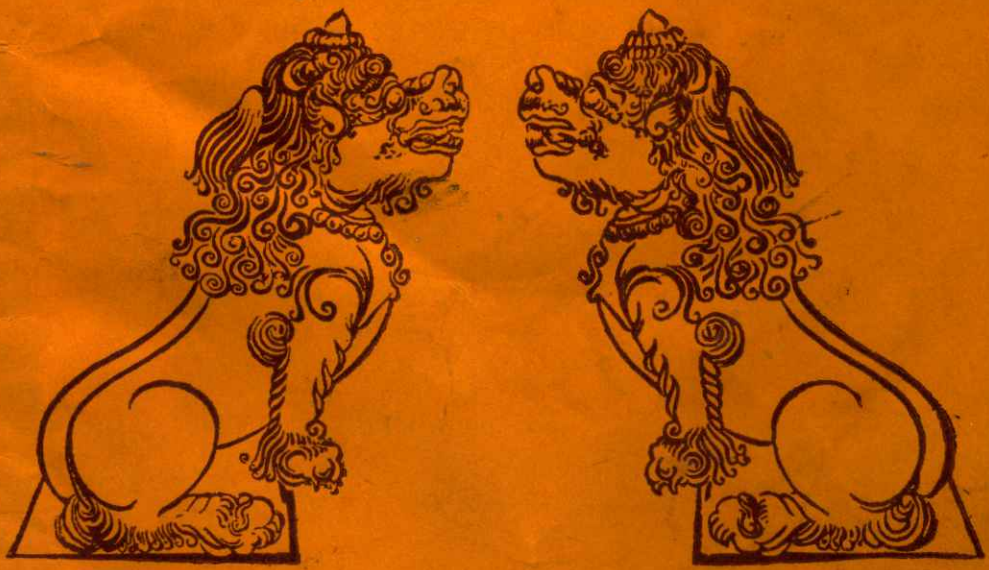

सूचनार्थ निवेदन है

'भैरवी' से 'तन्त्रयोग' तक—
'तन्त्रम्' भी नहीं,
अब 'तन्त्रयोग'

★ एक लम्बी प्रतीक्षा और पत्र व्यवहार का सुफल !

१९६४ में 'भैरवी' का डिक्लेरेशन दाखिल किया गया,
जो अस्वीकृत हुआ और १९६५ में 'आनन्द भैरवी' का भी।
उसके बाद 'मणिपीठ', 'मातृका' और 'अपरा'
में कोई भी नाम स्वीकृत नहीं हुआ।

तब १९६६ में 'तन्त्रम्' के लिए
आवेदन किया गया। और आशा हुई
कि यह नाम अवश्य स्वीकृत होगा।
लेकिन प्रेस रजिस्ट्रार द्वारा अभी-अभी

[जब कि तन्त्रम् का दूसरा अंक छप रहा था]

सूचना मिली है कि

तन्त्रम् नहीं 'तन्त्रयोग' की
स्वीकृति दी जा रही है।

● शायद यही मां की इच्छा है।

अब हर माह 'तन्त्रयोग' नियमित समय पर
निकला करेगा। अक्टूबर माह में विशेष
साजसज्जा सहित प्रवेशांक
निकलने जा रहा है।

● नाम परिवर्तन से हमारे उद्देश्यों
सिद्धान्तों और मूल्यों में कोई भी
हेरफेर नहीं हुआ है।

★ यह अंक भैरवी का परिशिष्टांक है। इस अंक से भैरवी के ग्राहकों का चन्दा समाप्त हो जाता है।

—व्यवस्थापक

नियमावली

उद्देश्य—तन्त्र, योग, धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, मानवता सम्बन्धी रचनाओं द्वारा विश्व के नागरिकों को सुपथ दिखलाकर उनमें नवचेतना फूंकने का प्रयत्न करना।

व्यवस्था

१. 'तन्त्रयोग' प्रतिमाह प्रथम सप्ताह में प्रकाशित होता है और ग्राहकों को भेजा जाता है।

२. १५ तारीख तक न मिलने पर अपने डाकघर से लिखापढ़ी करनी चाहिए। वहां से जो उत्तर मिले, उसके साथ हमारे कार्यालय को सूचित करना चाहिए।

३. किसी भी जानकारी या उत्तर के लिए जवाबी-टिकट भेजना आवश्यक है।

४. 'तन्त्रयोग' का वार्षिक मूल्य ६-०० रुपये है। ग्राहक बनने के लिए मूल्य मनीआर्डर से भेजना जरुरी है। आधे वर्ष के ग्राहक नहीं बनाए जाएंगे।

५. 'तन्त्रयोग' का वर्ष शारदीय नवरात्र से प्रारम्भ होता है, और भाद्र में समाप्त होता है। ११ साधारण अंक और शारदीय नवरात्र के समय एक सुन्दर सचित्र विशेषांक प्रकाशित होगा जिसका मूल्य ५) रुपये होगा। 'तन्त्रयोग' के ग्राहकों को यह विशेषांक उसी शुल्क में दिया जाएगा।

६. हमारे यहां की सभी प्रकाशित पुस्तकें 'तन्त्रयोग' के ग्राहकों को पौने मूल्य में मिलेंगी।

'तन्त्रयोग' सम्बन्धी किसी भी प्रकार के पत्र व्यवहार का पता है :—

तन्त्रम् प्रकाशन
१२६, फतेहपुर बिछवा
प्रयाग – २

कृपापत्र मिला

कौलाचार्य पं० श्री नथमल जी दाधीच-लक्ष्मणगढ़, सीकर (रा०)

'भैरवी को खोकर जितना खेद था, उससे अधिक खुशी 'तन्त्रम्' को पाकर हुई। श्री १००८ गुरुवर स्वामी अक्षोभ्यानन्द जी सरस्वती को हमारा साष्टांग दण्डवत कहेंगे। उनकी कृपा से पथभ्रान्त, हताश साधनहीन शाक्तों को आज 'तन्त्रम्' के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जिस अभूतपूर्व एवं महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने का आपने उद्घोष किया है उसको भगवती अवश्य पूरा करेगी। भारत ही नहीं बल्कि विश्व के लिए भी आपका कार्यक्रम अमृतोपम भेषज का काम करेगा। 'तन्त्रम्' के सभी लेख सुन्दर हैं। कुलगुरु का संदेश बड़ा ही मर्मिक तथा सारगर्भित है। मैं हृदय से 'तन्त्रम्' के प्रचार और प्रसार की मंगलमयी से प्रार्थना करता हूं।

श्री १००८ स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती— कनखल (हरद्वार)

तन्त्रम् के दर्शन पाकर हृदय में एक अद्भूत आनन्द की लहर उठ आई। हमारी शुभ कामना है कि आप अपने लक्ष्य में अभीष्ट सफलता प्राप्त करें।

'तन्त्रम्' (२ जुलाई ६८) के ३१ पृष्ठ पर 'मौनमूर्ति' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है। स्वप्न द्रष्टा ने लेख का उपसंहार यह कह कर किया है कि 'आखिर संसार कितना रहस्यमय है।' मेरे विचार से यही पर्याप्त नहीं है। इस पर आगे लेखक या सम्पादक की टिप्पणी होनी चाहिए थी कि अन्ततोगत्वा स्वप्न हैं क्या बला ? वेद-शास्त्र के अनुसार मानव जीवन के सारे रहस्य जाग्रत, स्वप्न और सुसुप्ति इन तीन अवस्थाओं पर निर्भर है। अतः इस पर यदि कुछ अधिक प्रकाश डाला गया होता तो जनसाधारण के लिए अत्यन्त लाभप्रद होता।

प्रो० पंडित माधवाचार्य जी सिद्धार्थ कालेज, बम्बई

मुझे 'तन्त्रम्' समय पर मिल गया। प्रायः सभी आराध्य देवताओं के मन्त्र उपनिषदों में है। सभी उपासनाएं वेद से ही आई हैं। अतएव सनातन धर्म की सभी उपासनाएं वेदादि धर्मग्रन्थों से सम्बद्ध हैं। यह मेरी खोज है तथा ऐसा परिपूर्ण निश्चय है।

उपासना के सभी मार्ग आज की अबोध जनता के सामने आएं तो संसार के व्याकुल जन जो कि अलौकिकता और चमत्कार क्या वस्तु है, यह नहीं जानते—वे इन बातों को देखें और जानें।

पत्र प्रचलित हो। तन्त्रम् के सच्चे उद्देश्य लोगों के सामने आएं। मुझसे जो कुछ भी बन पड़ेगा, पत्र के लिए हर संभव कोशिश करूंगा। मेरी शुभ कामना है कि 'तन्त्रम्' कुछ दिनों में एक प्रतिष्ठित पत्र हो जाए।

सूर्य प्रकाश गोस्वामी— **निवाड़ी (टिकमगढ़) म० प्र०**

'भैरवी' को 'तन्त्रम्' के रूप में प्रकाशित करने के हेतु मेरी बधाई स्वीकार करें। प्रकाशन बड़ा सुन्दर बन पड़ा है। यह पत्र शाक्त जगत को स्थायी साहित्य प्रदान करेगा, ऐसी आशा है। पीताम्बरा पीठ (दतिया) में भी प्रति भेजने का कष्ट करेंगे। पूज्य स्वामी जी को साष्टांग प्रणाम।

श्री इन्द्रवदन शुक्ल— **बगवाड़ा, बुलसर (गुजराज)**

सारे गुजरात से भैरवी' के बारे में लोग पूछ-ताछ करते थे। जवाब देते-देते मैं परेशान था। जुलाई माह के 'तन्त्रम्' को पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। बड़ी चाव से पढ़ गया। आनन्द की बात है कि 'भैरवी' नया कलेवर बदल कर 'तन्त्रम्' के रूप में आई है। मैं गुजरात राज्य शाक्त संघ की ओर से 'तन्त्रम्' का स्वागत करता हूँ।

★

कुछ स्थायी स्तम्भ

★ तान्त्रिक प्रयोगशाला—इस स्तम्भ के अन्तर्गत सिद्ध और अनुभूत तान्त्रिक प्रयोग जनहित के लिए प्रकाशित होंगे।

★ संस्कृति और धर्म—तान्त्रिक संस्कृति तथा विश्व धर्म पर अधिकारी विद्वानों के लेख और तान्त्रिक दृष्टि से परीक्षित कला, साहित्य और दर्शन पर विवेचनात्मक लेख दिए जायेंगे।

★ रहस्यमय संसार—पाठकों द्वारा देखा हुआ कोई विचित्र स्वप्न, अद्भूत घटना, अनहोनी बात और भयानक दृश्य पर आधारित लघु लेख।

★ तीर्थ यात्रा—किसी शक्ति महापीठ, शाम्भव पीठ, प्रसिद्धतीर्थ, पर्वतीय या समुद्रतटीय पावन स्थल, सिद्ध पीठ, साधना पीठ, पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण खंडहर, टीला या मंदिर का भग्नावशेष, किसी छोटी बस्ती या निर्जन स्थान में कोई देवी या शिव मंदिर सम्बधी सचित्र विवरण इस स्तम्भ के अन्तर्गत पढ़ने के लिए मिलेंगे।

★ आपकी दृष्टि—तन्त्र, शाक्तमत, कुलाचार, हिन्दू धर्म की सामान्य समस्याओं और 'तन्त्रम्' के सम्बध में पाठकों के विचारात्मक पत्र प्रकाशित किए जाएंगे।

★ इसके अलावे अन्य कई रोचक, मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक स्तम्भ भी प्रारम्भ किए जा रहे हैं।

★

तन्त्र योग

वर्ष–१ अंक–१—जन्माष्टमी–भाद्र— २०२३ : ७ सितम्बर '६६

संचालक—श्री १००८ स्वामी अक्षोभ्यानन्द सरस्वती

परामर्श सम्पादक—शिवकुमार शर्मा 'मानव'

व्यवस्था सम्पादक—बालकृष्ण वाजपेयी

सम्पादक

जगन्नाथ सिंह

—अनुक्रम—

	क्रम			पृष्ठ
कलापक्ष	विश्व शाक्त संघ	....		— ८
दर्शन जी	कुलगुरु का संदेश	...		— १०
●	पृथ्वी वन्दना	....		१३
कार्यालय	वैदिक शाक्तमत	....	प्रो० पं० माधवाचार्य जी	— १४
तन्त्रम् प्रकाशन				
१२६, फतेहपुर बिछवा	मां की गोद में	....	अकुलानन्द	— १६
प्रयाग—२	मां का आदेश	....	श्री शिवकुमार शर्मा मानव	— १७
●	सिद्ध मंत्र	....	कौ० पं० नथमल दाधीच	— २०
एक प्रति—५० पैसे	शाहाबाद के शाम्भवपीठ	....		— २६
वार्षिक—६–००	शाक्त संगीत	....	दिव्य, अवस्थी, गोस्वामी	— २३

विश्व शाक्त संघ

विश्व शाक्तसंघ एक अध्यात्मिक संस्था है। इसका किसी धर्म विशेष तथा राजनीति से कोई सरोकार नहीं। हिन्दु, मुसलमान, इसाई, बौद्ध किसी भी धर्मों से इसका अलगाव नहीं। यह विश्व के सभी मानवों में तांत्रिक चेतना का संचार करने के लिए संस्थापित है। विश्व का प्रत्येक नागरिक वह किसी भी राष्ट्र धर्म और जाति का हो, वह इस संघ की सदस्यता ग्रहण कर सकता है। यह संस्था अध्यात्मिक तंत्रवाद पर आधारित हैं। तंत्र एक विज्ञान है अतः उस विज्ञान को सीखने और उसके अनुसार अपने दैनिक जीवन को संचालित करने का प्रत्येक मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है। तंत्र मनुष्य को जीने की कला सीखलाता है। तंत्र विज्ञान का ज्ञाता समाज का विशिष्ट व्यक्ति बन जाता है, क्योंकि वह सृष्टि के रहस्य को पहचान जाता है। वह सृष्टि, जिसका मूलाधार शाक्तमत है यानी विश्व के कण-कण में शक्ति की वर्तमानता। शाक्त अद्वैतवाद का प्रचार करने वाली संस्था का नाम है विश्वशाक्त संघ।

उद्देश्यः—भारत के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का अक्षय भंडार वेद है। वेद जब दर्शन बना रहता है तब तक वह वेद कहलाता है, लेकिन वैदिक सिद्धान्तों को ज्योंही प्रयोगशाला में ढाला जाता है तो वह तंत्र-विज्ञान कहलाता है। इस तरह उसका नाम आगम और निगम बन जाता है। किसी युग में सारा भारतीय जीवन, सारी भारतीय संस्कृति निगमागम के द्वारा संचालित होती थी, तब यह देश सारे विश्व को ज्ञान का आलोक दे सका था, असंस्कृत जातियों को सभ्यता का पाठ पढ़ा सका था। लेकिन कुछ राजनैतिक कारणों से देश दुर्बल हो गया—हम शक्ति की उपासना भूल गए। तंत्र सामाजिक न रहकर व्यक्तिगत हो गया और गोपनीयता के गह्वर में चला गया। जिस तंत्र विज्ञान ने कभी रामायण और महाभारत जैसे भीषण युद्धों के लिए आयुध दिया था, वह गोपनीय बन कर राष्ट्र को मामूली बर्बर असभ्य आक्रामकों के हाथों नष्ट होने के लिए भगवान की मरजी पर छोड़ बैठा। अपने पराभव युग में भारत अपनी शांभवी विद्या को भूलकर पंगु बन गया। अंग्रेजी राज्य के साथ ही देश में जब पाश्चात्य सभ्यता आई और अपने साथ नए विज्ञान का चकाचौंध उसने भारतीय जीवन में बिखेरा तब हम आत्महीनता से ग्रस्त होकर स्वयं को असभ्य और जंगली तथा पश्चिमी सभ्यता के उपासकों को सुसंस्कृत तथा शालीन मान बैठे। यद्यपि राष्ट्रीय संग्राम काल में कुछ देशप्रेमी नेताओं द्वारा भारतीयों के हृदय में आत्म गौरव जगाने का प्रयास किया गया तो भी आज

[शेष पृष्ठ ३२ पर]

गां गणेशाय नमः

*

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि !

हम ज्ञान से कभी दूर न रहें। सम्पूर्ण ज्ञान से हम ओतप्रोत हो जाएं।

[अथर्व०—१।१।२]

तन्त्रयोग

मंगलाचरणम्

प्रलय जलधि मध्ये स्फीत फुल्लाम्बुजस्थाम्।
जलद पटल नीलां लोल जिह्वां त्रिनेत्राम्॥
शिव शवहृदि वासामासवा घूर्णिता क्षीमु-
डुगण कृत हारामाश्रये नील ताराम् ॥१॥
कर-कलित कपाला व्याल-माला कराला,
प्रकटित करवाला चन्द्रभाला विशाला॥
आगम-निगम सारा पारकारुण्य धारा,
भय-चकित मुद्धारा पाहिमामुग्र तारा ॥२॥

●

कुलगुरु का संदेश

मैरवकुंड, विन्ध्याचल

★

हठयोग और मंत्रसाधना

●

आनंदमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजभावयुक्तम् ।
योगीन्द मुग्रं भव-रोग वैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहंभजामि ॥

'तन्त्रम्' के प्रकाशन का सर्वत्र स्वागत किया जा रहा है यह जानकर हमें प्रसन्नता हुई है। 'भैरवी' का प्रकाशन बन्द हो जाने से हमें बहुत खेद था, लेकिन जगतजननी की कृपा से हमारा प्रयत्न सफलीभूत हुआ और हम शाक्त जगत तथा भारतीय संस्कृति के पुजारियों के ज्ञानार्जन, विचार विमर्श, मानसिक उत्कर्ष एवं अध्यात्मिक विकास के लिए 'तन्त्रम्' का प्रकाशन प्रारंभ करने के लिए सचेष्ट हुए हैं।

आज विश्व के नागरिक तीन धाराओं में अलग-विलग प्रवाहित हो रहे हैं। पहले वे जो निर्धन है, अशिक्षित हैं, साधनहीन हैं तथा अन्धविश्वासी हैं। ऐसे लोग एशिया और अफ्रिका में अधिक हैं तथा यूरोप और अमेरिका में भी बहुत हैं। ये प्राचीन रूढ़ियों के घेरे में नवयुग के प्रत्येक विकास और चकाचौंध को

सन्देह तथा उदासीनता से निरखते हैं। लेकिन इस वर्ग के लोग धर्मभीरु हैं और धर्म के प्रति इनकी आस्था है। ऐसे लोगों को आर्थिक स्वतन्त्रता दिलाए बिना संस्कृति और धर्म का पाठ पढ़ाना हास्यास्पद है। 'तन्त्रम' के पृष्ठों में इस वर्ग की आर्थिक और सामाजिक गुत्थियों को सुलझाने के लिए शाक्त दृष्टिकोण से अनमोल सूत्र प्रस्तुत किए जाएंगे।

दूसरा वर्ग उनका है जो बीसवीं सदी की फसल हैं। धर्म और संस्कृति शब्द इनके शब्दकोष में अन्धविश्वास और मूर्खता के पर्याय हैं। संसार के तमाम विश्वविद्यालयों में इनका उत्पादन धड़ल्ले से होता है। 'खाओ पीओ, मौज उड़ाओ, इनका सिद्धान्त है। इनकी अपनी अलग सांस्कृतिक और साहित्यिक मान्यताएं हैं। इनका जीवन दर्शन थोथे तर्क और नास्तिकता पर आधारित है। पैंट-बुश्शर्ट में ये राकेटयुग के बिटनिकी मजनू वर्तमान युग के सबसे खतरनाक, आत्मघाती और वाहियात जन्तु हैं। पृथ्वी पर मानवता की हरीभरी खेती चरने वाले, युद्ध और अकाल फैलाने वाले, विश्वशान्ति की खड़ी फसल को निगलने वाले ये बेमौत मरने के लिए उद्धत टिड्डीदल विश्व इतिहास के सबसे घृणित और हास्यास्पद कीड़े हैं। इनका न अपना देश है, न कोई धर्म, न कोई ईश्वर, न मानवता, न मंदिर। ये विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक हैं, कुत्सित भोगविलास इनका धर्म है, पैसा ईश्वर है, स्वार्थ ही मानवता है और कॉफीहाउस ही मंदिर है। चांदलोक पर सैर का सपना देखने वाले इन रंगीले कबूतरों को 'तन्त्रम्' द्वारा बतलाना है कि 'कितनी चिड़िया उड़े आकाश, दाना है धरती के पास।' इनकी सारी उच्छृंखलता, अनुशासन-हीनता, कुत्सितता, सामरिक उन्माद, स्वार्थपरता, भ्रष्टचारिता के निवरणार्थ 'तन्त्रम्' जगदम्बा से प्रार्थना करेगा।

तीसरे वर्ग में वे लोग है जो ज्ञानी पशु हैं। किसी न किसी सम्प्रदाय से सम्बन्धित धर्म और संस्कृति के ये ठेकेदार मूलधर्म से बहुत दूर हट कर मनमानी और अशास्त्रीय पद्धति को छाती से चिपकाए चल रहें हैं। आसन, प्रणायाम, योग, ज्योति दर्शन, कुंडलिनी जागरण तन्त्रमंत्र आदि सभी के ज्ञाता है और इनकी दुकानदारी आज-कल बहुत तरक्की पर है। धर्म और संस्कृति के सम्बन्ध में ये 'अच्छर-टूट' योगी, या महात्मा नामधारी सज्जन दया के पात्र हैं। हम इनको शुद्ध शास्त्रीय पद्धति और साधना से 'तन्त्रम्' द्वारा परिचय कराने की चेष्टा करेंगे।

एक बात और कि तन्त्र और योग के अधकचरे ज्ञान रखने वाले व्यक्ति भारत की इस प्राचीन विद्या को अर्थ-लोभ में बदनाम कर रहे हैं। अभी हाल में बम्बई में एक हठयोगी ने पानी पर चलने का दावा किया था, लेकिन असफल हो जग-हंसाई का पात्र बना। इस सम्बन्ध में एक बात बतला दूं कि हठयोग द्वारा कोई

भी जल पर नहीं चल सकता। ऐसी अद्भुत शक्ति एकमात्र मंत्र-सिद्धि द्वारा ही संभव है। जल पर चलना, आकाशगमन, अदृश्य साधन और कुछ अद्भुत सिद्धि तन्त्र के विषय हैं। और आज जैसा योग या हठयोग की धूम मची है, वास्तव में वह सब जनता को दिक्भ्रमित कर जीविका चलाने का साधनमात्र है। हठयोग सही है परन्तु उसकी उपयोगिता राजयोग का आधार बनने में है। जैसे एक साधक को दुर्लभ सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए तान्त्रिक साधना में लगना है। तब उसे आवश्यक है कि पहले वह प्राणयामादि हठयोग की प्रक्रियाओं से अपने शरीर की शुद्धि तथा पुष्टि कर ले। अगर साधारण साधनों से उसे सिद्धि नहीं मिली तो बहुत संभव है उसे नीलक्रम या चीनाचार का साधन करना पड़े। उसमें भी अन्तिम लता साधन में कई दुरुह आसनों में स्थित होकर मंत्र जपना पड़ता है, जैसे शवासन, शीर्षासन, धनुषासन, वृश्चिकासन आदि जैसे कठिन आसनों में लता साधन करना पड़ता है। अतः हठयोग की क्रिया द्वारा जिसने पहले ही अपने शरीर को संयमित नहीं कर लिया है वह उग्र तान्त्रिक साधनों में भ्रष्ट हो जायगा। इस तरह हठयोग महासिद्धि के मार्ग में सहायक है, साधन का अंग है, वही साध्य या लक्ष्य नहीं हैं। युद्धकला का अभ्यास करने वाले सैनिकों को व्यायाम और परेड करना आवश्यक होता है उसी तरह तांत्रिक साधकों के लिए हठयोग की क्रियाओं को भी समझना चाहिए। और जिस तरह केवल जिमनास्टिक और परेड कर कोई सैनिक टैंक या नेट द्वारा शत्रु को पराजित नहीं कर सकता उसी भांति कोई भी हठयोगी जल पर चलने या आकाश में उड़ने का सामर्थ्य नहीं प्राप्त कर सकता। विशुद्ध तांत्रिक साधना के प्रसंग में हठयोग की उपयोगिता और उसके महत्व के सम्बन्ध में 'तन्त्रम' उपयोगी साहित्य का प्रकाशन करेगा।

विश्व में फैली तमाम सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक भ्रांतिओं के विरुद्ध 'तन्त्रम्' के प्रकाशन को युग क्रान्ति के रूप में ग्रहण करना होगा।

१५ अगस्त के महान राष्ट्रीय पर्व के शुभअवसर पर भारतमाता से प्रार्थना करते हैं कि वह हममें ऐसा बल भर दे कि उसकी अखण्डता, स्वतंत्रता, सुरक्षा और सम्पन्नता के लिए हम जान की बाजी लगा दें।

विश्व शान्ति और मानवता के कल्याणार्थ आद्याशक्ति भगवती के आगे नतमस्तक हुए हम हैं—

आपके ही शुभेच्छु,
स्वामी अच्योभ्यानन्द सरस्वती

पृथ्वी वन्दना

(ऋषि—अथर्वा (ब्रह्मवर्चसकामः)। देवता—अदितिः। छन्द–त्रिष्टुप् जगती)

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवाअदितिःपञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।१।
महीमू षु मातर सुव्रतानामृतस्य पत्नीमवसे हवामहे।
तुविक्षत्रामजरन्तीमुरूचीं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।२।
सुत्रामाणं पृथिवी द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
देवी नावं स्वरित्रामनागसो अस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये।३।
वायस्य नु प्रसवे मातरं महीमिदितिं नाम वचसा करामहे।
यस्याउपस्थ उर्वन्तरिक्षं सा नःशर्मत्रिवरूथंनि यच्छात्।४।

[अथर्ववेद का० ७-अ० १-सू० ६]

यह पृथ्वी ही स्वर्ग, यही अन्तरिक्ष, पैदा करने वाली माता, उत्पादक पिता तथा उत्पन्न हुआ पुत्र है। यही सब देव, और पञ्चजन भी यही है। जो कुछ उत्पन्न हुआ है, हो रहा है और उत्पन्न कर रहा है वह सब अदिति पृथ्वी ही है ॥१॥ शुभ कार्य करने वालों की हितकारी, बहुत प्रकार के क्षात्र तेजयुक्त, सत्य का पालन करने वाली, अविनाशी, विशाल, सुखदाता, अन्न प्रदान करने वाली देवमाता अदिति (पृथिवी) की हम रक्षा के लिये आवाहन करते है ॥२॥ अच्छी तरह रक्षा करने वाली, पृथ्वी पर हमें सुख देने वाली, कुशल रखने वाली, छेद रहित सुदृढ़ नौका की भांति चढ़कर उसकी शरण में जाते हैं ॥३॥ अन्न की उत्पत्ति के लिए, उस पृथ्वी माता अथवा मातृभूमि का हम गुणगान करते हैं जिसके समीप ही विस्तृत आकाश है। वह पृथ्वी माता हमको तिगुना सुख प्रदान करे ॥४॥

★

वैदिक शाक्त मत

सर्वतंत्र स्वतंत्र विद्यामार्तण्ड प्रो० पं० माधवाचार्य जी

●

वेदान्त ब्रह्मसूत्र के 'शक्ते रसं भवात्' सूत्र पर दृष्टि जाती है तो विश्वास होता है कि अन्यों के समान शक्ति से संसार की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय मानने वाला भी आर्षमत विद्यमान था।

इस मत के लोग प्रायः अथर्ववेदी थे। अब भी एक सौ बारह उपनिषदों में शाक्तों के भी कई उपनिषद् विद्यमान हैं।

देवी उपनिषद् उनमें ८४ वां है। इसमें लिखा है—सब देवताओं ने देवी से पूछा कि हे महादेवि आप कौन हैं? इस प्रश्न के उत्तर में भगवती ने कहा कि—मैं ब्रह्म स्वरूपिणी हूँ, प्रकृति-पुरुष, शून्य-अशून्य, आनन्द-दुख, विज्ञान-अविज्ञान, आदि सब मुझसे ही प्रकट हुए हैं।

इसके पश्चात् भगवती के श्रीमुख से वेद की ऋचाएं भी देवगणों के सामने प्रकट हुईं। देवगणों ने उनसे भगवती का स्वरूप जाना।

वे ऋचाएं जिन्हें भगवती ने देवताओं को सुना कर अपना रूप समझाया था, अम्भृणा महर्षि की वाग नामक पुत्री ने उसे समाधि में देखकर अपना भगवती के स्वरूप में अनुसन्धान किया था।

उन ऋचाओं का अथर्ववेद के चौथे काण्ड के छठे अनुवाक का तीसवां सूक्त है 'ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि' यहां से लेकर 'ऐतावती महिम्ना सं बभूव' यहां पूरा होता है।

अजामिल तंत्र में 'इस सूक्त के वैध अनुष्ठान से भगवती का साक्षात्कार होता है' ऐसा माना है। इस सूक्त को मैं देवी उपनिषद् में देखता हूँ। अतः देवी ने इसी सूक्त के द्वारा देवों को अपना स्वरूप समझाया है यह स्पष्ट प्रतीत होता है।

'नमो देव्यै महादेव्यै' यह मंत्र भी देवी उपनिषद् में विद्यमान है।

'तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीम्' यह मंत्र भी मुझे देवी उपनिषद् में मिलता है। इसे मैंने व्रतराज में महर्षि सौभरि के दृष्ट मंत्र के रूप में पाया है। वहां इससे भगवती का पूजन होता है। उक्त उपनिषद् में-'ह्रीं' मंत्र को सर्वार्थ साधक माना गया है। श्रुति कहती है कि—

"वियदीकारसंयुक्तं, वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या, बीजं सर्वार्थसाधकम्॥

वियद् बीज 'ह', अग्नि बीज 'र', 'ई' कार और अर्ध विन्दु-इन चारो के योग से 'ह्रीं' बन जाता है। इसे दो ॐ शब्दों के बीच में रख कर श्रीहर्ष ने अपने नैषध में सरस्वती देवी के महामंत्र का रूप दे दिया है।

'ह्रीं' मंत्र की प्रशंसा में आगे श्रुति ने कहा है कि इस एकाक्षर मंत्र को शुद्ध चित्त वाले ज्ञानी त्यागी लोग जप कर परमानन्द को प्राप्त होते हैं। मेरा तो ऐसा विश्वास है कि मंत्र-ब्राह्मण और ऐसे ही उपनिषदों के आधार पर दुर्गा सप्तशती बनी है। श्रुति ने—'वाङ्मया ब्रह्मसू' यहां से लेकर भगवती के नवार्ण मंत्र को बताकर फिर कहा है कि 'नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः' यह नवार्ण मंत्र बड़े भारी आनन्द का दाता है। दुर्गापाठियों के यहां नवार्ण मंत्र असाधारण वस्तु है। जब इस का भी अस्तित्व उपनिषद् में है तो फिर समझना चाहिए कि भगवती की उपासना की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं हो सकती जिसका मूल वेदादि महाग्रन्थों में न हो।

कहीं भी क्यों न कहा हो, जब वेद में भी आभिचारिक कर्म का प्रकरण हो वहां एक प्रकार का तंत्र ही आ जाता है। अथर्ववेद के गृहय और श्रौत सूत्रों से उनका रूप परिस्फुट हो जाता है।

वेद में भी कामना पूर्ति के सभी उपाय विशुद्ध नहीं है। केवल भावनात्मक शुद्धि से निर्वाह किया जाता है।

तभी तो अथर्ववेद में—'मुग्धा देवा उतशुना यजन्त, उत गोरंगैः पुरुधा यजन्तः।' कर्मफल की लालसा से विवेक शून्य बने ऋत्विज और यजमान यज्ञ में कुत्ते तक का उपयोग किए बिना नहीं मानते। विश्ववन्द्या गऊ के अंगों से तो वे अनेक प्रकार के यजन करते हैं। यह कहा है। इससे यह प्रतीत होता है कि वेद ऐसे यजनों को विशुद्ध नहीं मानता। पर होते हैं, इस बात से वह इनकार भी नहीं करता।

ऊपर की मेरी बातों से प्रतीत होगा कि—तंत्र शास्त्र का मूल भी वेद है। जो तंत्र को अवैदिक मानकर वैदिक कर्म कलाप को कलियुग में निस्सत्व मानते हैं वे एकदेशीय तांत्रिक हैं। सर्वदेशीय तांत्रिक नहीं हैं। हमें तंत्र में भी अपनी सभ्यता के मूलभूत वेद को सामने रखना चाहिए। कभी निन्दा नहीं करनी चाहिए। ॐ शान्तिःशान्तिःशान्तिः!

रूम नं० ४०, जर्मन सिलवर बिल्डिंग
पांचवां माला, दूसरा भोईवाड़ा
भोलेश्वर, बम्बई—२

★

मां की गोद में

अकुलानन्द

मृत्यु आनन्द का प्रतीक-काली भयावनी, आनन्ददायिनी, भोगदायिनी ! शरीर पाश से मुक्त करने वाली महाकालिका के आगमन का सूचक, उसी भांति विषयानन्द, सुरानन्द, भोगानन्द उस महाकृपामयी मृत्यु के समीप पहुंचाने वाले पुष्पक विमान, तान्त्रिक साधन में म-पंचक का प्रयोग उसी महामृत्यु की गोद तक पहुंचाने वाले वाहक के रूप में ! इसलिए मादक वस्तुओं में आनन्द ।

नशा जो होश को रूफ्ता कर दे—मदहोश-बेहोश, सांसारिकता से बेखबर । यानी जो मृत्यु के निकट है, बस दो कदम की देर है । एक झोंका और, फिर मृत्यु की गोद में चिरशान्ति ! जो बेखबर नहीं है, होश में है वह आनन्द से दूर—मृत्यु से दूर—कृपामयी मां से दूर है ।

मां—मृत्यु की गोद में चिरलीनता दिलाने वाली वस्तु क्या तुच्छ है ? मां की गोद में सोने वाला लाड़ला क्या मृत है ?

जो मृत्यु की गोद में है वह नहीं मरा है । जो मृत्यु से दूर है उसको मरने का भय है । क्योंकि वह मां से दूर है, होश में है, बेहोश नहीं है, इसलिए वह आनन्द से दूर है, सत्य से दूर है, मृत्यु से दूर है ।

मौत से डरने वाला वह सयाना बेटा है—अ ने बलबूते पर संसार सागर में जूझने वाला । लेकिन जो सयाना नहीं है, नादान है, वह मां के निकट है । उसके सभी कुशल क्षेम मां के हाथों !

कोई क्या इन्तजाम करेगा, जब अपने हाथ के वश की बात नहीं । सारी होशियारी तो उसके आगे मात है । उस छलनामयी, लीलामयी महामाया से भला होशियारी कर कोई कहां जाएगा ? 'तीन लोक भग जाल पसारा, कहां जाओगे बाबू !' और फिर उनके आनन्द का क्या कहना जो अभी बाहर आए नहीं; मां के पेट के भीतर हैं, गर्भस्थ हैं । वैसे परमहंस मां के, आनंद के, सुधा के, सुरा के, सुंदरी के, मृत्यु के अति निकट हैं ।

आखिर यह सब क्या है, सब मां ही न है ! तब उसके बाहर क्या, भीतर क्या? स्थूल रूप में गोचर सृष्टि, सूक्ष रूप में प्रकाश, ध्वनि, परमाणुशक्ति से भी सूक्ष्मतर ! वही तो सर्वत्र व्याप्त है । उससे परे कुछ नहीं । उसके स्पंदन अणु प्रकाश, ताप आदि रूप में सूक्ष्म से स्थूल की ओर प्रवाह हैं ।

ठोस चट्टान बल्कि कीमती चट्टान-सोना, हीरा । इनका उल्टा-नासो (सोना) नाश कर दो । राही (हीरा) उसे नाश कर राही बना दो-वह सिर्फ पथ में भटका करे, सुपथ न पकड़े । उसकी मंजिल विपरीत दिशा में—सूरज की ओर पीठ किए चलने वाला यात्री । सत्य से विमुख !

शब्द जिसे बेधता है, रंग जिसको खींचता है, तान जिसे छेड़ती है, कविता जिसे गुदगुदाती है—वह अवश्य कोई पागल होता है, बेहोश होता है, आनंद में होता है, मृत्यु के निकट होता है, मां की गोद में होता है ।

मां का आदेश

श्री शिवकुमार शर्मा मानव

'भई आकाश वाणी तेहि काला ।
चकित विप्र सब सुनि नभ वाणी ॥
गगनगिरा गम्भीर भई हारणि शोक संदेह ।'

संत तुलसीदास के उपरोक्त पद हमें देववाणी और आकाशवाणी का परिचय प्रतिवर्ष रामलीला के द्वारा कराते है, पर उन्हें हम अन्तर्चेतना द्वारा ग्रहण नहीं करते, जब तक भारतीय उपासक थे तब तक इसके विभिन्न अंगों से भली भांति परिचित थे । जब से भारतीय मंत्र तत्व, जिसका दूसरा नाम परावाक् है, से अपरिचित हो गये तब से मंत्र या परावाक् के चमत्कार का अनुभव अन्तर्चेतना द्वारा उन दिव्यादेशों के ग्रहण करने की शक्ति और विश्वास भी खो बैठे । इसका प्रधान कारण अंग्रेजों द्वारा भारतीय धर्म और संस्कृति के प्रति दूषित और एकाङ्ग दृष्टि प्रदान करना है । आज किसी के अन्तर में क्या है ये दूसरी बात है, पर आज भारत में धार्मिक क्रियाकलाप और संस्कारों को पोपलीला कहा जाता है । पर यहां पर सही बात यह है कि पोप शब्द विदेशी है, उसके साथ-साथ पोपलीला भी विदेश में ही होती रही है, भारत में नहीं ।

प्राचीनकाल में भारतीय संस्कृति के साथ साथ देववाणी के महत्व को भी यूरोपवालों ने जाना, विशेष कर ग्रीक देश के निवासियों ने । यूरोप में इसे ओरेकल कहा जाता है । ओरेकल (देववाणी) के पांच भेद माने जाते हैं । १. देववाणी २. पुरोहित कर्त्तृक देववाणी ३. देवाश्रित कर्त्तृक देववाणी ४. अपने हृदय में देव वाणी ५. ज्योतिषगण कर्त्तृक देववाणी । यूरोप में स्थान स्थान पर देववाणी के मंदिर थे । मंदिर में जाकर अभीष्ट प्रश्न का उत्तर पाने के लिये पूजा-पाठ-यज्ञ,

हवनादि किए जाते थे। ग्रीक में डेल्फि नामक स्थान पर एलोपो देवमंदिर इस तरह की देववाणियों के लिए प्रसिद्ध था। बाद में जगह जगह ऐसे देव मंदिरों का निर्माण हुआ और समस्त यूरोप ओरेकल में विश्वास करने लगा, कुछ काल तक देववाणी केवल मंदिरो में ही होती रही, पर जनता की श्रद्धा देख कर पुरोहित वर्ग भी देववाणी करने लगा। कालक्रम से इसका प्रभाव इतना बढ़ा कि गांव-गांव, घर-घर बड़े-बूढ़े, स्त्री-पुरुष और बालक-बालिकायें आदि सभी भविष्यवाणी करने लगीं। इसका प्रभाव यहां तक बढ़ा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने हृदय में देववाणी होने की बात समाज में प्रचारित करने लगा। यही कारण है कि ग्रीक के इतिहास में कोई भी युद्ध या विशिष्ट कार्य ऐसा नहीं हुआ जो ओरेकल से बगैर परामर्श किये हुआ हो।

ग्रीक के डेल्फि नामक ओरेकल पर तो यूरोप की सम्पूर्ण ऐतिहासिक घटनाएं आधारित हैं! प्रारम्भ में चाहे सच्चाई रही हो पर बाद में इसने बहुत ही घृणित रूप धारण कर लिया था। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिये पुरोहित वर्ग से या देववाणी कर्त्ताओं से देववाणी या भविष्यवाणी करवा कर स्वार्थ सिद्ध करने लगा। राजा और पुरोहित वर्ग से लेकर साधारण जनता तक ने इससे अनुचित लाभ उठाया। यूरोप के पापाचार, अनाचार, युद्ध-संधि-विग्रह ओरेकल के ही दुरुपयोग के परिणाम है। यूनान के पतन के बाद यूरोप पर पोप (पुरोहितवर्ग) का साम्राज्य स्थापित हुआ, पोप लोगों ने भी ओरेकल पद्धति को अपनाया। इनके यहां काष्ठ की बनी भयंकर मानव आकृतियां गधे, घोड़े, जेबरा या विचित्र प्रकार के जानवर जो कि देवस्वरूप माने जाते थे नहीं बोलते थे पर और सब बातें पूर्ववत् रहीं। रूस का जारवंश भी इन्हीं का कृपापात्र था। जार तथा पोप वर्ग के अत्याचार से समस्त विश्व परिचित है। भारतीय भी इससे परिचित हैं, विशेष कर सभ्य भारतीय तो अवश्य परिचित हैं क्योंकि वह विदेशी फिल्मों में प्रायः इस व्यापार को रोज ही देखते हैं। पर वे लोग दिमागी दासता के कारण उस पर सोचना नहीं चाहते। यूरोपियन जब कहता है कि यह पोपलीला है तब वह अपने इतिहास से अपने मान परिमान के आधार पर अपनी परिभाषा में कहता है और इस प्रकार अपना दोष भारतीयों पर जबरन लादता है, किन्तु दुःख इस बात का है कि सभ्य भारतीयों ने इस बात को कभी नहीं सोचा और इसे (पोपलीला को) अपना शब्द और अपनी चीज बना ली। फलस्वरूप सभ्य भारतीय अपनी ही संस्कृति और धर्म-कर्म से घृणा करने लगे और विदेशी शब्दों में स्वयं को दोषी ठहराने लगे।

देववाणी या आकाशवाणी का सम्बन्ध परावाक् से है, शब्द ब्रह्मस्वरूपिणी पराम्बा ही इसका नियंत्रण करती है। यह समस्त विश्व नादात्मिका सृष्टि का ही व्यापार है, इसी से चलन कलनात्मक व्यापार और संहारात्मक व्यापार घटित होता है। यह स्वतंत्र रूप से प्रकाशित होती है। यह किसी के अधीन, ऋषि

मुनि और योगियों से लेकर साधारण साधक तक के हृदय में प्रकाशित होती है, देवतागण और ऋषि वर्ग के सामूहिक प्रार्थना करने पर आकाशवाणी के रूप में प्रकट होती है। कभी-कभी देवता-ऋषि वर्ग और विश्व के कल्याण के लिये स्वतंत्र रूप से भी प्रकाशित होती है। जब तक उच्चकोटि के साधक भारतवर्ष में थे तब तक स्वयम्भू ज्योतिर्मयी प्रतिमायें जिन मंदिरों में आविर्भूत थी, उन मंदिरों में भी देव-वाणी होती थी। मानस में 'नमामिशमीशान निर्वाण रूपम्' प्रमाण है। इसी वस्तु को केशवचन्द्र सेन तथा अरविन्द घोष ने भी जनभाषा में "भगवानेर दिव्यादेश" के रूप में समझाने का सद्प्रयत्न किया है।

यां सूक्ष्मां नित्या मतीन्द्रियां वाचां साक्षात्कृत धर्माणो मंत्र दृशः पश्यन्ति। तामसाक्षात् धर्मेभ्यः परेभ्यः प्रति वेदयिष्यमाणा विल्मं समामनन्ति। स्वप्ने वृत्तमिव दृष्ट श्रुतानुभूत माचिरव्या सन्ते।

मंत्रद्रष्टा ऋषिगण जिस अतीन्द्रिय सूक्ष्मावाक् (परावाक्) को देखते हैं। उसे साधारण साधक वर्ग याने जिन्होंने ब्रह्म के स्वभाव का साक्षात्कार नहीं किया है, ऐसे लोगों को सूक्ष्मावाक् का संवेदन कराने के लिए परम्पराविद् ऋषिगण उस अतीन्द्रिय वाणी को इन्द्रिय गम्य वेदवेदांग के (खण्डशः व्याख्या) रूप में प्रगट करते हैं। स्वप्न में दृष्ट, श्रुत और अनुभूत पदार्थ को प्रकाशित करने के लिये जैसे स्थूलेन्द्रिय गोचर वाणी का आश्रय लिया जाता है वैसे ही अतीन्द्रिय सूक्ष्मा वाक् का निरूपण भी संभव है।

चैतन्यं सर्व भूतानां शब्द ब्रह्मेति मे मतम् ॥
तत्प्राप्य कुण्डली रूपं प्रणवाकर प्राणिनाम् ॥
वर्णात्मनाऽऽविर्भवति गद्यपद्यादि भेदतः ॥
सोऽन्तरात्मातदा देवि नादात्मानदते स्वयम् ॥
यथा संस्थान भेदेन सम्भूय वर्णतां गतः ॥
वायुना प्रेर्यमाणोऽसौ पिण्डाद्बलिं प्रयास्यति ॥
मूलाधारात् प्रथम मुदितो यस्तु भावः पारख्यः ॥

समस्त प्राणियों में शब्द ब्रह्म ही चैतन्य रूप में स्थित है। यही प्राणियों में प्रणवाकारा (सार्द्ध त्रिवलया) कुण्डली रूप में स्थित है। इसी के प्रबुद्ध होने पर उस सूक्ष्मा वाक् या परावाक् का सम्पूर्ण ज्ञान होता है, उसका स्वभाव जान लेता है।

अकारादि क्षकारान्तं स्वयं परम कुण्डली,
सर्वं चराचरं विश्वं वर्णात्मासूयते ध्रुवम् ॥
नानाशास्त्र पुराणं इतिहासं च सुन्दरी,
वेदांश्च श्रुतिशास्त्रं च अन्यानि यानि कानि च ॥

ऐसा होने पर याने उससे तादात्म्य स्थापित कर साधक निगमागमकी रचना करने में समर्थ होता है।

विशुद्ध भारतीय परम्परा में घटित एक देववाणी की कथा मैंने बहुत पूर्व कुलयोगी भू० पू० बस्तर नरेश महाराज कुमार श्री प्रफुल्लचन्द्र भञ्जदेव से सुनी थी, उसे ही यहां लिपिबद्ध कर रहा हूं। [देववाणी की कथा अगले अंक में]

●

• गृहस्थोपकारक प्रयोग

सिद्ध मन्त्र

कौलाचार्य पंडितप्रवर
श्री नथमल जी दाधीच
श्री भुवनेश्वरी महाशक्तिपीठ
लक्ष्मणगढ़, सीकर (राजस्थान)

साधारण गृहस्थों के उपकार एवं उनके नित्य नैमित्यिक कार्य में सहायता के लिये कई लघु मन्त्रों का संग्रह करके लिपिवद्ध कर रहे हैं। प्रयोग विधि भी साथ में ही संलग्न करके प्रदर्शित कर रहा हूं। इन प्रयोगों में किसी प्रकार के पुर्श्चरणादि की आवश्यकता नहीं हैं। निम्नप्रयोगों में से कुछ का मैंने अनुभव किया है एवं साधक गण आवश्यक समय पर प्रयोग पर सत्यता की उपलब्धि करेंगे।

किसी के प्रति देवता कुपित होने पर—

(१) 'ॐ शान्ते प्रशान्ते सर्व क्रोध प्रशमने स्वाहा'—इस मंत्र का पाठ करते हुये यदि प्रत्याह जलद्वारा मुख प्रक्षालन कर ले तो देवता क्रोध का परित्याग करता हैं। अर्थात देव दोष का परिहार होता है।

(२) "क्रीं ह्रीं ओं ह्रीं"—इस मन्त्र द्वारा लौह कील सप्तवार अभिमंत्रित कर व्याघ्र के सन्मुख प्रक्षेप करने पर उसका स्तंभन होता है।

(३) "ॐ ह्रीं खीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं फ्रीं ह्रीं"—इस मन्त्र को जो व्यक्ति एकाग्र चित्त से अपने हस्त में लाल वर्ण के फूल की माला गूंथते हुये देवी उद्देश्य से शतवार जप करेगा तो सकल अनिष्ट दूर होगा और वह चिरकाल तक सुख भोग करेगा।

(४) "ॐ क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं फट्"—प्रत्याह शुद्ध चित्त से भैरव भैरवी का ध्यान करके इस मन्त्र का अर्द्ध सहस्त्र जप करने पर सकल प्रकार का मंगल का होता है।

(५) "ओं हूं कारिणी प्रसव शीतलां"—इस मन्त्र द्वारा गाय भैंस को तृण अभिमंत्रित कर खिलाया जाए तो दुग्ध वृद्धि होती है।

श्वेत आक का मूल पुष्य नक्षत्र में आहरण करके एक अंगुष्ट प्रमाण गणपति की मूर्ति का निर्माण करे, बाद में हविष्याशि एवं ब्रह्मचारी होकर, संयत मन से भक्ति श्रद्धा सहकार से—।

(६) ॐ पंचान्तकं अन्तरीक्षाय स्वाहा"—इस मन्त्र द्वारा लाल कनेर के पुष्प घृत मधु द्वारा मिश्रित करके

(७) "ॐ पंचान्तकं शशिधरं वीजागणपतव्विदुः ॐ ह्रीं पूर्व्वदयां ॐ ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा"—इस मन्त्र द्वारा हवन करने से देवगणपति इष्ट फल देते हैं।

(८) "ॐ ह्रीं हयशीर्ष वागीश्वराय नमः"—यह मन्त्र प्रत्याह एकादश शत जप करने वाला वाग्मी कवि होता है।

(९) "ॐ ओं ह्रीं ह्रीं ह्रः ह्रः फट् स्वाहा"—सरसो लेकर इस मन्त्र द्वारा अभिमंत्रित कर रोगी गात्र में निक्षेप करे तो सर्व प्रकार के दोष शान्त होते हैं।

दिव्य दृष्टि साधन

(१०) "ॐ नमो रुद्राय रुद्ररूपाय नमो बहुरूपाय नमो विश्व रूपाय नमो विश्वात्मने नमस्तत् पुरुष यक्षाय नमः, यक्ष रूपाय नमः एकस्मै नमः एकाय नमः एकरौरवाय नमः एक यक्षाय नम एकेक्षणाय नमो यक्षाय नमो वरदाय नमः तुद तुद स्वाहा"—यह मन्त्र संयत चित्त से एक हजार आठ बार जप करके दिव्यदृष्टि लाभ के लिये साधना करे, हिजल वृक्ष के पत्ते लाकर घर में स्थापन करे। बाद में चिता, रजक गृह से—

(११) "ॐ ज्वलित विद्युते स्वाहा"—इससे अग्नि ग्रहण करके पूर्व स्थापित पत्रों में अग्नि प्रज्वलित करे बाद में—

(१२) "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय वबन्ध श्रीपतये स्वाहा"—इस मन्त्र से बत्ती अभिमन्त्रित करके—

(१३) "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय सिद्धिसाधकाय ज्वल ज्वल पतपत पातय पातय बन्ध बन्ध संहर संहर दर्शय दर्शय निधिमम"—इस मन्त्र से प्रदीप प्रज्वलित करे।

(१४) "ॐ ऐं मन्त्र सिद्धेभ्यो नमो विश्वेभ्य स्वाहा"—इस मंत्र से कज्जल बना कर—

[१५) "ॐ कालि कालि महाकालि रक्षेद मंजनं नमो विश्वेभ्य स्वाहा"—इस मंत्र से अभिमंत्रित करके नेत्र में लगावे तो निधि लाभ हो, तथा दिव्य दृष्टि प्राप्त हो।

(१६) स्वर्ण शलका द्वारा यह काजल "ॐ सर्व्वे सर्व्व सहिते सर्वौषधि प्रवाहिते विरते नमो नमः स्वाहा"—इस मंत्र द्वारा नेत्र में अंजन प्रदान करे। इससे साधक को दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है। तब घोर अंधकार में भी दिन की तरह सभी वस्तु दीख पड़ती है। सिद्ध, चारण, सूक्ष्म देव योनि, भूछिद्र, गुप्त धनादि दृष्ट होते हैं।

अदृश्य साधन :—इन सकल प्रकार के साधनों में नित्य नैमित्यिक क्रियावान् दीक्षित साधकों की आवश्यकता है। साधक पवित्र होकर श्मशान में उपवेशन पूर्वक नग्न होकर—

(१७) "ॐ ह्रीं ह्रीं स्फें श्मशानवासिनीं स्वाहा'—इस मंत्र का चार लक्ष जप करे। इससे यक्षिणी संतुष्ट होकर पादुका प्रदान करती है। "तेनावृतो नरोऽदृश्यो विचरते पृथ्वी तले।" उस पादुका द्वारा समस्त पृथ्वी पर विचरण करने पर उसको कोई नहीं देख

सकता। आक, तुला, शिमलतुला, कपास तुला, पद्म सूत्र इन पांच सूत्रों की बत्ती बनावे। बाद में पंच मानव खोपड़ी में नरतैल द्वारा उन पांचों को प्रज्वलित करे। बाद में ऊपर पांच नर कपाल लाकर उन पांचों पर रखे, पृथक् पृथक् काजल प्रस्तुत करे। तदंतर यह पांच काजल एकत्रित करके :—

(१८) "ॐ हूं फट् कालि कालि महाकालि मांस शोणितं खादय खादय देविमा-पस्यतु मानुषेति हूं फट् स्वाहा"—इस मंत्र द्वारा अष्टोत्तर सहस्र बार अभिमंत्रित करे। इस काजल का अंजन करने पर देवताओं द्वारा भी अदृश्य होता है। उसे त्रिभुवन में कोई नहीं देख सकता। यह साधन श्मशान के शिवालय में करना प्रशस्त है, उसके अभाव में शिवालय में किया जा सकता है। इस विद्या लाभ के लिये पहले अधिकार प्राप्त करे। रात्रि काल में निशाचर को ध्यान करते हुये वाम हस्त द्वारा

(१९) "ॐ नमो निशाचर महामहेश्वर मम पर्य्यटतः सर्व लोक लोचनानी वन्धय बन्धय देव्या ज्ञापयति स्वाहा" इस मन्त्र का एकाग्र चित्त से जप करे। कामरत्न तन्त्र में लिखा है,—एक लक्ष जप करने पर यह अदृश्य कारिणी विद्या सिद्ध होती है। विधि उल्लंघन करने पर तन्त्र विद्या में फल लाभ नहीं किया जा सकता।

अनावृष्टि हरण साधन :—यथाविधि वरुण देव का जप करने पर अवश्य वृष्टि होती है। प्रथम स्वस्ति वाचन कर संकल्प करे, बाद में गणेशादि पंच देवों का पूजन करे। भूत शुद्धि करके प्राणायाम, अंगन्यास, करन्यास करे।

(२०) "ॐ पुष्करावर्त कैर्मोघै प्लावयन्त वसुन्धरां, विद्युत् गर्जित सन्नद्ध तोयात्मानं नमाम्यहम्। यस्य केशेषू जीमूतो नद्य सर्व्वांग सन्धि षू कुक्षौ समुद्रा श्चत्वार तस्मै तोयात्मने नमः। इस मंत्र से ध्यान कर अपने मस्तक पर पुष्पदान कर मानसोपचार से पूजन करे। बाद में अर्घ्य स्थापन और पुनः ध्यान कर वरुण देव का आवाहन कर यथाशक्ति पूजन करे। बाद में जप आरंभ करे। जप के साथ चिंतन, इच्छा, क्रिया शक्ति का संयोग होना जरूरी है। प्रजापति ऋषि त्रिस्टुप्छन्दो वरुणो देवता एत द्राज्यमभि व्याप्य सुवृष्ट्यर्थे जपे विनियोगः' यह मंत्र पाठ करके त्रिशक्तियों को स्थिर करना होगा। बाद में नदी अथवा पुष्करणी में नाभि परिमित जल में खड़ा होकर जप करना होगा।

(२१) "ॐ वं" यह मंत्र आठ हजार बार जप करे। निश्चय वृष्टि होगी। जलप्रविष्ट होकर "हूं श्रीं हूँ" इस मंत्र का जप आरंभ करने पर बिना ध्यान पूजन के वृष्टि होती है।

शाक्त संगीत

स्तुति

●

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

अम्बिके शिवे सदा मैं शरण हूं तिहारी,
शरण हूं तिहारी मात, शरण हूं तिहारी,
अम्बिके शिवे सदा मैं शरण हूं तिहारी ।।टेर।।
चंड मुंड ओ निशुम्भ शुम्भ धर्नुधारी,
एते सब दैत्य मार सुरसमाज तारी, अंबिके शिवे सदा ।।१।।
पुत्र मित्र ओ कलत्र झूठे संसारी,
नाम तो जगदम्ब एक, सत्य हितकारी, अम्बिके शिवे सदा ।।२।।
कर अनेक घात, बात हाथ से बिगारी,
बिगरि बात मेरी मात, आप लो सुधारी, अम्बिके शिवे सदा ।।३।।
अन्त, 'दिव्य' जोड़ हाथ नमत बारंबा,
लाज अब रखो माँ, काज दो सुधारी, अम्बिके शिवे सदा ।।४।।

सुरतिगिरी बंगला, कनखल
हरद्वार ।

●

कलाकार की कला

कमला प्रसाद अवस्थी 'अशोक'

मुझे हार देने वाली जो, उसे प्यार देता हूं मैं।
सगुण कल्पना का मधु-लोभी
अपनी कलिका को पुकारता,
शब्दों का फिर दर्पण लेकर
रूप-चन्द्रमा को उतारता,
विरह-निशा की गहराई में उठा ज्वार देता हूं मैं।
मुझे हार देने वाली जो···

कवि के युग की छाती पर है
अंकित जिसकी चरण-वंकिमा,
उसको भी गति-शतदल अर्पण
करता, तजकर भाव-रंकिमा,
गरल-पात्र का गात्र बदलकर सुधाधार देता हूं मैं।
मुझे हार देने वाली जो···

जो हो, जिसकी अरुणाई थी—
बिछा गयी, किरणें तम-पथ पर,
जिसकी अल्हड़ अंगड़ाई भी
मंगल-कलश बनी थी अथ पर,
उसी मंजुला काव्य-कला को कलाकार देता हूं मैं।
मुझे हार देने वाली जो···

८७, टेढ़ी नीम,
काशी।

गीत | सूर्य प्रकाश गोस्वामी

छेड़ो वीणा की झंकारे
उर की तारे टूट न जाएं।
माता दृढ़ संकल्प सिखा
दो मेरा धीरज टूट न जाए
ज्योति शक्ति आनन्दरूपिणी
मेरे मन मंदिर में आओ।
हृदयासन पर बैठ भारती
नव छन्दों की तान सुनाओ
मेरे शून्य गगन के तम में।
ऊषा की आभा छितराओ।
मानसरोवर के मराल को
सद्गुण मोती सदा चुगाओ।
जननी मेरे जीवन धन को
दुर्गुण दानव लूट न जाएं।
मेरी पावन मन माला के
मन के मनके टूट न जाए।
यंत्री बन कर मम जीवन की
मुझको अपना यंत्र बनाओ।
तंत्री बन जाओ मां दुर्गे
मुझको अपना तंत्र बनाओ।
मंत्री बन जाओ अब मेरी
मुझको अपना मंत्र बनाओ।
जननी ! लाल लाड़ला मुझको
अपना प्यारा पुत्र बनाओ।
माता अपना रूप दिखाओ
मेरी आशा रूठ न जाए।
निशि दिन पंथ तुम्हारा देखूं
मेरी आंखें फूट न जाएं।

शाहाबाद के शाम्भव पीठ

प्राचीन काल में विदेह और वत्स के बीच करूष नामक जो प्रदेश था उसे आज शाहाबाद कहा जाता है। लेकिन इसका अत्यधिक प्रचलित नाम आरा है जो अरण्य का अपभ्रंश है। बिहार राज्य में तीन प्रसिद्ध अरण्य हैं, अरण्य (आरा); सारण्य (सारन); चम्पारण्य (चम्पारन)। हिमालय की उत्पत्ति के बाद नवीन हिमालय और पुराने विन्ध्यगिरि के मध्य ब्रह्म-गंगा ह्रद (इन्डोब्रह्म नदी) को सिन्धु, गंगा, ब्रह्मपुत्र तथा उनकी सहायक नदियां तेजी से भरने लगीं तो पूर्वी उत्तर प्रदेश के जिलों का भूभाग और उत्तरी आरा, छपरा तथा चम्पारन जिलों का अस्तित्व सबसे अन्त में सामने आया। इसलिए शतपथ ब्राह्मण के अनुसार यह देश वर्तमान काल के सुन्दर वन की तरह घनघोर वन से ढंका था और जनशून्य था। इस निर्जन वन्य प्रदेश को वैदिक ऋषियों ने अपना साधनस्थल बनाया। आरा के सौभाग्य से गंगा तट पर बक्सर (वेदगर्भ) में ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने अपना सिद्धाश्रम बनाकर भोज जाति को वैदिककाल की सर्वोत्तम और सुसंस्कृत जाति में ढाला। आगे चलकर भोज जाति भर्ग और मल्ल दो शाखाओं में बंट गई, लेकिन विश्वामित्र ऋषि के प्रभाव से उनका शांभव संस्कार वर्तमान रहा। फलस्वरूप आरा जिला में शाक्तपीठों और शांभवपीठों की बहुलता आज भी देखी जा सकती है।

आरा शहर के शिवमंदिर—आरा जिला की प्रधान देवी अरण्य माता, हैं उन्हीं के नाम पर इस जिला का नाम आरा पड़ा है। अरण्य देवी का मंदिर औरंगजेब द्वारा तोड़वा दिया गया था। नया बना हुआ मन्दिर औरंगजेबी मस्जिद की बगल में है। शहर की बनावट में काफी परिवर्तन होने से आज मालूम नहीं पड़ता कि अरण्य देवी के भैरव का मन्दिर कौन है। लेकिन अनुमान किया जाता है बिन्द टोली के सिद्धनाथ महादेव अरण्य देवी के भैरव हैं। दोनों मन्दिरों में विशेष दूरी भी नहीं है और सिद्धनाथ महादेव के पास प्राचीन मूर्तियों का भग्नावशेष जो बिखरा है, उससे उस स्थान की प्राचीनता का बोध होता है। मालूम पड़ता है, कभी यहाँ विशाल शिव मन्दिर रहा होगा। भग्न मूर्तियों की शिल्पकला गुप्तकाल की मालूम पड़ती हैं। आज एक विशाल आंगन में कई छोटे-छोटे मन्दिर बने हैं जिनमें दुर्गा, भैरव, गणेश, हनुमान की मूर्तियां स्थापित हैं। दूसरी ओर कई छोटे छोटे शिवालय बने हैं जिनमें दो बहुत अच्छे हैं। मध्य भाग में तीन शिवालय हैं जिनमें सबसे उत्तरी भाग में बाबा सिद्धनाथ विराजमान हैं। यह सिद्ध स्थान है। महानिशा में बड़ा ही रमणीक दृश्य दिखलाई पड़ता है। आरा शहर के उत्तर निर्जन भाग में स्थित यह स्थान साधकों के लिए महत्वपूर्ण है। शिवरात्रि के समय यहां मेला लगता है।

आरा शहर में दूसरा महत्वपूर्ण शिव मन्दिर पातालेश्वर महादेव का है। महाजन टोली न०-१ के उत्तरी फाटक से प्रवेश करते ही यह मन्दिर बड़ा रमणीक ढंग से बना है। कभी यहां प्राचीन मन्दिर होगा, लेकिन आज एक नवीन मन्दिर में भूमि से करीब १० फीट नीचे श्री पातालेश्वरनाथ स्थापित हैं। अर्घ्य में तीन लिंग हैं और दीवार में पार्वती-गणेश विराजमान हैं। मन्दिर में बिजली बत्ती और पंखा लगा हुआ है। मन्दिर के बाहर गणेश, दुर्गा और हनुमान की मूर्तियां स्थ पित हैं। श्री दुर्गा की मूर्ति बड़ी भव्य है। एक छोटी बाटिका में श्री शिव की जटा से गंगा-प्रवाह की बनी कृत्रिम प्रतिमा बड़ी मनमोहक है।

बिचली सड़क पर एक जीर्णशीर्ण मंदिर में बूढ़े महादेव जी का विशाल शिवलिंग स्थापित है। संभवतः इन्हीं के नाम पर आरा शहर के मध्य भाग की सड़क को महादेव रोड कहा जाता है। यह शिवलिंग भी बहुत प्राचीन है। शिवरात्रि के समय यहां भक्तों की अच्छी भीड़ जुटती है। इस मंदिर के जीर्णोद्धार की अत्यन्त आवश्यकता है।

आरा शहर से ६ मील पश्चिम मसाढ़ नामक गांव में महिषमर्दिनी का मंदिर है। कभी यहां सैकड़ों मंदिर थे जिनका भग्नावशेष आज भी मौजूद है। देवी जी के

ठीक सामने एक वह वृक्ष के नीचे छोटा सा शिवलिंग है जिसमें शिव की सुन्दर कलापूर्ण मुखाकृति बनी है। यह दर्शनीय शिवलिंग है।

आरा सदर सबडीविजन—के जगदीशपुर से आग्नेय कोण में असुधर नामक एक छोटा सा गांव है। यहाँ एक अद्भूत शिव मंदिर है। इस मंदिर के अन्दर दीवारों के चारों कोने में चार छोटे छोटे मंदिर बने हुए हैं जिनमें सूर्य, विष्णु, गणेश और पार्वती की बड़ी आर्कषक प्रतिमायें स्थापित हैं। बीच हाल में वाणलिंग स्थापित है जो कुंडलिनीरूपी सर्पिणी से आवेष्ठित है। एक ही मंदिर में पंचदेवों की यह सुव्यवस्थित कलापूर्ण स्थापना बड़ा मनमोहक है। अन्दर से ही मंदिर के ऊपरी भाग को कालभैरव, हनुमान, योगिनो, क्षेत्रपाल आदि देवताओं के सुन्दर चित्रोंसे अलंकृत किया गया है। इस समय मंदिर बेमरम्मत है और पूजा की भी समुचित व्यवस्था नहीं है।

इसी असुधर गांव से ठीक दक्षिण दो मील की दूरी पर कोकिला नामक गांव है। आज यह मुसलमानों की बस्ती है। वे कभी क्षत्रिय थे और मुसलमानी शासन काल में भ्रमवश उन्होंने धर्म परिवर्तन कर लिया। यह गांव बहुत प्राचीन ज्ञात होता है, क्योंकि गांव के पश्चिम बहुधारा नदी के किनारे आज जो शिवमंदिर वर्तमान है वह किसी प्राचीन मंदिर के भग्नावशेष पर बना है। वहां खुदाई करने से अत्यन्त कलापूर्ण मूर्तियों के खण्डित भाग मिलते हैं। महाशिवरात्रि के समय यहां मेला लगता है

आरा सासाराम छोटी लाइन के पीरो स्टेशन से पश्चिम ३ मील की दूरी पर **बहरी महादेव** का बहुत ही रमणीक स्थान है। मन्दिर तो नवीन है लेकिन यह स्थान प्राचीन है। यहां भी महाशिवरात्रि के अवसर पर मेला लगता है।

बक्सर सबडीवीजन—में दो शिवस्थान बहुत ही प्रसिद्ध हैं। प्रथम, बक्सर में गंगातट पर रामरेखा घाट स्थित **श्री रामेश्वर नाथ महादेव जी** का मंदिर जिसे ताड़िका वध के पूर्व विश्वामित्र मुनी ने श्री रामचन्द्र जी के कर कमलों से स्थापित करवाया था। प्राचीन मंदिर तो मुसलमानी युग में तोड़ दिया गया, वर्तमान मंदिर भी दो सौ वर्षों से कम पुराना नहीं। यहां काले पत्थर का बहुत ही आकर्षक शिवलिंग स्थापित है। मंदिर के आगे संगमर्मर के बने विशाल नान्दी दर्शनीय हैं। प्रवेशद्वार के दाहिनी ओर कालभैरव और बायीं ओर हनुमान की विशाल प्रतिमाएं निर्मित हैं। इस मंदिर से सटे दक्षिण भाग में हनुमान मंदिर भी सुन्दर है। रामेश्वर नाथ जी के मंदिर से सटे उत्तर ही पार्वती जी का मंदिर तथा एक मंडप में हवनकुंड बना हुआ है। पार्वती जी की दो मूर्तियां है जो बहुत ही

भावपूर्ण और कलात्मक हैं। यह सिद्ध स्थान है यहां का जप या पुरश्चरण शीघ्र फलदायक होता है।

दूसरा मंदिर रघुनाथपुर स्टेशन से दो मील उत्तर **ब्रह्मपुर में श्री बाबा ब्रह्मेश्वर नाथ** जी का है। यहां भी कभी प्राचीन मंदिर था जिसके भग्नावशेष पर नवीन मंदिर बना है। मंदिर बाहर से अत्यन्त सादा है लेकिन मन्दिर के ऊपर बना पीतल का विशाल त्रिशूल और अनेक रंगीन झंडों की सजावट दूर से यात्री का मन मोहती है। मंदिर एक विशाल प्रांगण में है। पास-पास ही दो मंदिर एक बरामदे के दोनों ओर आमने सामने बने हैं। बीच के बरामदानुमा हॉल के मध्य में विशाल नान्दी हैं। पूर्व भाग में शिवमंदिर के फाटक पर एक ओर हनुमान जी और दूसरी ओर कालभैरव की विशाल प्रतिमायें बनी हुई हैं। प्रवेशद्वार के दोनो ओर द्वारपाल भी बने हैं। चौखट के ऊपर विनायक विराजमान हैं। मंदिर के अन्दर भी गणेश की कई प्राचीन मूर्तियां रखी हुई हैं। मध्य भाग में विशाल शिवलिंग स्थापित है। इतना बड़ा शिवलिंग शाहाबाद के किसी भी शिवमंदिर में नहीं है।

पश्चिमी भाग का मंदिर पार्वती मंदिर कहलाता है जो छोटा सा है। उसके मध्य में काले पत्थर का बड़ा ही सुन्दर शिवलिंग है और वायव्य कोण में दीवार से सटी हुई पार्वती जी की प्रतिमा स्थापित है जो एक शिवलिंग में निर्मित है। शिवलिंग में पार्वती जी की बनी इतनी कलापूर्ण प्रतिमा शायद ही कहीं हो।

इसकी कला गुप्तकाल की मालूम पड़ती है जो प्राचीन मंदिर के भग्नावशेष से लेकर स्थापित की गई जान पड़ती है। इस मंदिर के प्रवेशद्वार पर भी द्वारपाल बने हैं तथा दोनो बगल में कौबेरी और नारसिंही की बड़ी ही सुन्दर मूर्तियां दीवार में स्थापित हैं। बरामदे से सटे आंगन में हवनकुंड है और उसी के पास एक ऊंचे चबूतरे पर असंख्य छोटे-बड़े शिवलिंग रखे हुए हैं।

यह मंदिर एक विशाल तालाब के पश्चिमी पींड़ पर बना है। यह तालाब पूर्व-पश्चिम लम्बा है यानी सूर्यवेधी है। इसमें बहुत ही सुन्दर घाट बने हैं और इसका जल कभी सूखता नहीं। ये सूर्यवेधी तालाब भर्ग संस्कृति के अवशेष हैं। भर्गों द्वारा ऐसे ही सरोवर मसाढ़, रोहतासगढ़, तूरांव (गूंजाडीह) में बनवाए गए थे। इस तालाब को ब्रह्मसर कहा जाता है और इसकी सूर्यवेधी आकृति इसकी प्राचीनता की घोषणा करती है। ब्रह्मपुर में महाशिवरात्रि के समय सवेशियो का बड़ा भारी मेला लगता है।

नंगटा महादेव—ब्रह्मपुर से एक मील दूर ईशान कोण पर आरा बक्सर रोड पर ही नंगटा महादेव का स्थान है। सड़क की बगल में एक पीपल पेड़ के

नीचे टीले पर नंगटा महादेव का विशाल लिङ्ग खुले आकाश में पड़ा है। कई लोगों द्वारा प्रयत्न करने पर भी यहां मंदिर नहीं बन पाया। यह बड़ा ही उग्र स्थान है। साधन तथा शिवाबलि के लिए यह स्थान बहुत उत्तम है।

सासाराम सबडीवीजन—में सबसे प्रसिद्ध शिव स्थान **कस्तर महादेव** का है। कस्तर गांव छोटी लाइन के विक्रमगंज स्टेशन से तीन मील उत्तर है। एक छोटे तालाब के किनारे एक शिवमंदिर बना है जिसमें कष्टहर महादेव का अत्यन्त सुन्दर लिङ्ग एक अद्भूत पीतल से निर्मित अठपहले अर्ध्य में स्थापित है। इस अठपहले पीतल के अर्ध्य में सूर्यादि देवों की बहुत ही सुन्दर मूर्तियां बनी हुई हैं। यहां पर शिव जी का स्वयंभू लिंग स्थापित है। यह सिद्ध शाम्भव पीठ है और साधकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ भी महाशिवरात्रि के समय विशाल मेला लगता है।

इस जिला का सबसे अद्भूत शिवमंदिर रोहतासगढ़ में है जिसे **चौरासन** कहा जाता है। ८४ सीढ़ियों के ऊपर यह दो मंजिला शिवमंदिर बनाया गया था। ऊपरी मंजिल टूट गई है लेकिन मंदिर का जो भाग बना है, वह बहुत ही कलापूर्ण है। ८४ सीढ़ियों पर बना मंदिर संभवतः नाथपंथी कौलिकों द्वारा बनवाया गया था। यह मंदिर ११ वीं सदी से पहले का है।

गुप्तेश्वर नाथ का गुफा मंदिर—सासाराम से दक्खिन-पश्चिम कोने पर १३ मील दूर दुर्गावती नदी द्वारा निर्मित खोह (गार्ज) में एक विशाल गुफा है जिसमें गुप्तेश्वर नाथ का स्वयंभू लिंग वर्तमान है। कहा जाता है शिव जी भस्मासुर के भय से यहीं छिपे हुए थे। गहरे धुंआ से ढंके प्रवेश द्वार के बारे में लोक प्रसिद्धि है कि यहीं भस्मासुर जल मरा था। यह स्थान बडा रमणीक है। यहाँ के शीतल-कुंड का जल गर्मी के मौसम में भी अत्यन्त शीतल रहता है। पगध्यान मुखराम राम घाट रोहतास की ओर से और सुगवा घाट सासाराम की ओर से जाने पर मिलते हैं।

बाबा बंगालनाथ—विक्रमगंज स्टेशन से सड़कमार्ग द्वारा पांच मील की दूरी पर सूर्यपुरा नामक बस्ती में बाबा बंगालनाथ का स्थान है। यद्यपि वहां एक छोटा सा मंदिर मौजूद है तो भी आप खुले मैदान में बने एक पीतल के सुन्दर अर्ध्य के अन्दर विराजमान हैं। जमींदारी उन्मूलन के पूर्व सूर्यपुरा स्टेट के मालिकों द्वारा यहां एक पुजारी नियुक्त थे, लेकिन अब यह स्थान वीरान जैसा है। स्थानीय जनता भी इस सिद्धस्थान के प्रति उदासीन है।

श्री दूधेश्वर नाथ—विक्रमगंज से तीन मील पश्चिम नोनहर नामक गांव के नैऋत्य कोण में बस्ती के करीब-करीब बाहर दूधेश्वर नाथ का श्वेत मंदिर

विराजमान है । मेरे परम पितामह के पिता श्री नायक राय इनके परम भक्त थे। वे सालों भर उन्हें दुग्धधारा से ब्रह्मबेला में स्नान कराते थे, इसलिए मैं आपको नायकेश्वर नाथ ही कहता हूँ । यह अत्यन्त सिद्ध स्थान है ।

इन मंदिरों के अलावे शाहाबाद में पुरातत्व की दृष्टि से तीन शिव मंदिर और हैं । जहाँ भक्तों द्वारा जल तो नहीं चढ़ाया जाता परन्तु किसी युग में वे वर्तमान काल के अन्य जाग्रत शांभवपीठो से भी अधिक महत्वपूर्ण थे। प्रथम मंदिर तड़ारी थाना में हसनबाजार स्टेशन से आग्नेय कोण में ७ मील दूर **महादेवपुर गांव** में है । यह मंदिर दो मंजिला है और प्रसिद्ध पुरातत्वज्ञ कनिंघम का मत है इसी मंदिर को देखकर बोधगया का मंदिर दो मंजिला बनाया गया। इस तरह यह बिहार का सबसे प्राचीन शिव मंदिर संभवतः भर्ग गणतंत्र के विकास काल में बना था। करीब २५ सौ वर्ष पुराना यह महादेव मन्दिर पुरातत्व विभाग की कृपा से वंचित बेमरम्मत पड़ा है ।

दूसरा अत्यन्त महत्वपूर्ण शांभवपीठ वर्तमान रामगढ़ थाना में **वैद्यनाथ** नामक गांव में है । आज यह स्थान जीर्णशीर्ण है । मुसलमान आक्रमणकारियों द्वारा वैद्यनाथ मंदिर ध्वंस कर दिया गया । वहां की अनेक सुन्दर मूर्तियां चोर उठा ले गए, जो थोड़ी बची है वे ही वैद्यनाथ की कहानी कहने के लिए पर्याप्त हैं । पुरातत्व विभाग द्वारा इस स्थान की देखभाल भी नहीं होती ।

इन शिवस्थानों के अतिरिक्ति भभुआ से ७ मील दूर दक्षिण **मुण्डेश्वरी धाम** नामक पहाड़ी पर एक मंदिर स्थित है जो गुप्तकाल में बना था, उसी मंदिर के मध्य में स्थापित करीब ४ फीट ऊंचा चर्तुमुखी शिवलिंग भी दर्शनीय है। मुण्डेश्वरी देवी का मंदिर वर्तमान मंदिर से दक्षिण स्थित था जो एकदम तोड़ डाला गया है ।

प्रत्येक शाक्त को शाहाबाद के इन शांभवपीठ की यात्रा करनी चाहिए, ये मनोवांछित फल और दुर्लभ सिद्धियों के दाता हैं ।

●

[पृष्ठ ८ का शेषांश]

१८ वर्षों की आजादी के बाद भी अपनी संस्कृति, धर्म, भाषा, आदि के प्रति हम पूर्ण आत्मसम्मानी और जागरूक नहीं हो पाए हैं। अपने भले राधेश्याम रामायण के कथावाचक पंडित से तुलसीदल का प्रसाद ग्रहण कर लें लेकिन अपनी सन्तान को पूर्ण पाश्चात्य वेशभूषा और बिटनीक संस्कृति में पलते पनपते देख कर गद्-गद् होते हैं। आज हम घोर सांस्कृतिक दिवालियापन के युग में जी रहे हैं। अपने देवस्थानों, कलाकृतियों, प्राचीन संगीत, आयुर्वेद, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीयता की ओर पीठ फेरे पश्चिमी सभ्यता के आगे नतमस्तक हो प्रतिदिन इसी कामना से जागते-सोते हैं, कि भारत कब यूरोप-अमरीका बन जायगा।

ऐसी सांस्कृतिक पराधीनता की दयनीय स्थिति में विश्व शाक्त संघ की स्थापना का एकमात्र उदेश्य है भारतीय जन समाज को भारतीयता के प्रति सच्ची श्रद्धा और विवेक जगाना। हालांकि ऐसे ही कामों में अनेक व्यक्ति और संस्थाएं लगी हैं लेकिन हम भारत में तन्त्र विज्ञान और तान्त्रिक संस्कृति को प्रतिदिन के जीवन में ढालकर राष्ट्र को यूरोप-अमरिका होने से बचाएंगे। हमारा ऐसा विश्वास है कि भारत अपने में सम्पूर्ण है और इस देश को भारत बने रहने में ही गौरव है तथा विश्व का भी कल्याण हैं।

अगले अंक में विश्व शाक्त संघ के संघठन की रूपरेखा, संविधान तथा योजना को प्रकाशित किया जाएगा। इस सम्बन्ध में शाक्तबन्धुओं द्वारा प्रस्तुत सुझाव और राय सादर ग्रहण किया जाएगा।

शाहाबाद शाक्त संघ

शाहाबाद शाक्त संघ की स्थापना १९६२ में हुई थी। विश्वशाक्त संघ की अन्य प्रान्तीय और जिला स्तर की शाखाओं में सबसे अधिक सुनियोजित, संगठित और सक्रिय शाहाबाद शाक्त संघ है। इसकी कार्य समिति के सदस्य बड़े मनोयोग से शाक्त संसार की सेवा में निरत हैं। सदस्यों द्वारा प्रत्येक माह गोष्टियों और चक्रानुष्ठान का आयोजन हुआ करता है। ग्राम-ग्राम में चक्रकेन्द्र खुल रहे हैं और 'श्रद्धालु' बड़ी संख्या में कुलाचार की दीक्षा ग्रहण कर रहे हैं। शाहाबाद शाक्त संघ के कार्यक्रमों की कुलगुरु ने बहुत ही प्रशंसा की है।

शाहाबाद के शाक्तों की एक महत्वपूर्ण गोष्ठी और चक्रपूजन का आयोजन गया के मंगलागौरी पीठ स्थान पर अप्रैल माह में हुआ था। उस महापीठ में आयोजित यह तीसरी गोष्ठी थी। उक्त अवसर पर कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी स्वीकृत हुए थे जिनमें सबसे प्रधान यह था कि 'तन्त्रम्' के नियमित रूप से

प्रकाशन के लिए एक पुष्ट कोष का संचय किया जाए और भैरवकुंड आश्रम के उत्थान के लिए भी धन एकत्रित किया जाए। शाक्त मत के संगठन और उत्थान के लिए कुलगुरु का बड़ा ही सारगर्भित भाषण हुआ। उसी समय शाहाबाद शाक्तसंघ के अध्यक्ष श्री बांके बिहारी सिंह की सेवाओं से प्रसन्न होकर कुलगुरु ने उनकी पदोन्नति कुलबटुक (कुलगुरु के निजी सचिव) के पद पर कर दी। अध्यक्ष के नए चुनाव होने तक श्री सीतारामानन्द नाथ अस्थायी तौर से कार्यवाहक अध्यक्ष चुने गए।

२ जुलाई को गुरुपूर्णिमा के शुभअवसर पर कुलगुरु की अध्यक्षता में शाहाबाद के शाक्तों की एक महत्वपूर्ण गोष्ठी द्वारा यह तय हुआ कि शाहाबाद शाक्त संघ के अध्यक्ष तथा कार्य समिति के सदस्यों का चुनाव एक वर्ष के लिए किया जाए और अब प्रत्येक वर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सभी सदस्य भैरवकुंड उपस्थित हुआ करें तथा नए अध्यक्ष कार्यसमिति का गठन कर सदस्यों की सहमति से वर्ष भर के कार्यक्रमों की योजना, बजट और अपने द्वारा किए जाने वाले महत्वपूर्ण कार्यों का संकल्प शाक्त संसद के सम्मुख उपस्थित करें।

गुरुपूर्णिमा के दूसरे दिन ३ जुलाई को शाहाबाद शाक्त संघ के अध्यक्ष पद के लिए श्री सीतारामानन्द नाथ सर्वसम्मति से चुने गए। कुलगुरु और विश्वशाक्त संघ के प्रधान मंत्री की सहमति से निम्नलिखित पदाधिकारी और सदस्य मनोनित हुए :—

१-श्री सीतारामानन्द नाथ—अध्यक्ष
२—श्रीरामविलास सिंह—उपाध्यक्ष
३—श्री रघुनाथ प्रसाद सिंह—प्रधान सचिव
४—श्री शिव प्रसाद दूबे—प्रचार सचिव
५—श्रीरामजन्मानन्द नाथ—साधन सचिव
६—श्रीरामाश्रय प्रसाद—संघठन सचिव
७—श्री शिवप्रसन्न सिंह—कोषाध्यक्ष
८—श्री रामकेवल सिंह—सदस्य
९—श्री पारसनाथ सिंह—सदस्य
१०—श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह—,,
११—श्री इन्द्रासन सिंह—,,
१२—श्री राम सेवक लाल—,,
१३—श्री जमुना प्रसाद साह—,,

१४—डा० हरिहर पांडे—सदस्य

१५—श्री निशिकान्त चौबे—सदस्य

शाक्त संसद की राय से यह तय हुआ कि प्रचार और संघठन की दृष्टि से जिला को तीन भागों में विभक्त कर दिया जाए—(१) आरा सदर, इस क्षेत्र में कार्य संचालन की जिम्मेदारी श्री रामकेवल सिंह और श्री रामाश्रय प्रसाद पर रहेगी।

२–सासाराम—इस क्षेत्र में कार्य संचालन की जिम्मेदारी श्री राम विलास सिंह, श्री महेश लाल और श्री शिव प्रसन्न सिंह पर रहेगी।

३–बक्सर—इस क्षेत्र के कार्य संचालन की जिम्मेदारी श्री शिवप्रसाद दूबे और श्री निशिकान्त चौबे पर रहेगी।

इन सभी जिम्मेदार सदस्यों को आवश्यक निर्देश प्रधान कार्यालय से प्राप्त होते रहेंगे। इन्हें भी अपने कार्य का मासिक विवरण प्रधान कार्यालय को देना होगा।

अगस्त माह में सासाराम के ताराचंडी धाम में शाहाबाद शाक्त संघ की गोष्ठी करने के निश्चय के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

अगले अंक में बिहार राज्य शाक्त संघ, गया जिला शाक्त संघ और गुजरात राज्य शाक्त संघ का विवरण पढ़ें।

★

आपकी सहायता हमें किस प्रकार मिल सकती है ?

तन्त्र और शाक्तमत के प्रति अपनी विमूढ़ धारणा का परित्याग करें।

तन्त्र विज्ञान है—ध्वनि विज्ञान। बिना इसकी आजमाइश किए तान्त्रिकों की आलोचना न करें।

'तन्त्रम्' के ग्राहक बनें और अपने साथियों में इसका प्रचार करें।

कौलमत की दीक्षा ग्रहण करें। पशुभाव का परित्याग करें।

शाक्त साम्यवाद को अपने जीवन में उतारें तथा पूँजीवाद और साम्यवाद के पचड़े में पड़े विश्व नागरिकों को कौलमत का सुपथ दिलखावें।

●

अमर प्रकाश सिंह द्वारा प्रकाशित तथा उन्हीं द्वारा भैरवी प्रेस, १२६, फतेहपुर बिछवा, प्रयाग—२ से मुद्रित।

तान्त्रिक साहित्य का एकमात्र प्रतिष्ठान

भैरवी प्रकाशन

१२६, फतेहपुर बिछवा, प्रयाग—२

प्रकाशित पुस्तकें :—

१—शाक्त संगीत—१.००

२—महाशक्तिपीठ विन्ध्याचल —१.००

यन्त्रस्थ :—

३—अजपाजप

४—चक्रपूजा पद्धति

५—शव साधन

६—मुण्ड माला

७—कुण्डलिनी विज्ञान

८—महाकाल पञ्चाग

९—उड्डीयान महाशक्तिपीठ

१०—योनितंत्र—इस ग्रन्थ में कुलाचार साधना, कुंडलिनी योग, नीलक्रम, चीनाचार, कामकला, आदिपर सम्यक प्रकाश डाला गया है। पुस्तक में कुछ दुर्लभ और बहुमूल्य चित्र भी दिए गए हैं। साधकों के लिए यह अवश्य पठनीय है।